खेतड़ी नरेश अभय सिंह के अंग्रेजों के साथ सम्बंध

डॉ. अन्जू शर्मा

राजा अभय सिंह दूरदर्शी व्यक्ति थे। उन्होंने अंग्रेजों की उभरती शक्ति को मराठों के शक्तिशाली विरोधी के रूप में देखा और अंग्रेजों से सहयोग करने का निर्णय लिया। अंग्रेजों के सम्बंध स्थापित करने में लेफिटनेंट कर्नल डब्लू.एल. गार्डनर का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। गार्डनर का एक पत्र, जो उन्होंने उत्तर भारत में अंग्रेजों के मुख्यालय में कमाण्डर इन चीफ जनरल लेक को भेजा था, से खेतड़ी और अंग्रेजों के प्रारम्भिक सम्बंधों की जानकारी मिलती है। गार्डनर के पत्र से पता चलता है कि अभय सिंह के साथ उनकी मित्रता होने एवं उनके आग्रहपूर्ण निवेदन के कारण अभय सिंह अंग्रेजों के साथ सम्बंध स्थापित करने लिए तैयार हुए और उनकी आज्ञा से खेतड़ी तथा अन्य दुर्गों पर 1 अक्टुबर 1803 ई. के दिन अंग्रेजी ध्वज फहराया। पत्र से पता चलता है कि खेतड़ी का वकील 300 राजपूत सवारों सहित जनरल लेक की सेवा में उपस्थित हुआ था। खेतड़ी के सवारों ने सिंन्धिया के विरूद्ध 1नवम्बर 1803 ई. को लड़े गये लासवाड़ी के युद्ध में अंगेजों की ओर से भाग लिया। खेतड़ी की सामरिक सहायता और सैनिकों के वीरत से सन्तुष्ट हो कर लार्ड लेक ने 2 दिसम्बर 1803 को कोटपूतली का परगना 20000 रूपये वार्षिक के इस्तमरार पर खेतड़ी को प्रदान किया था।